एक अनकही कहानी

ऊषा

सामग्री– कुछ मिट्टी के बर्तन, हाथ का बुना कपड़ा, एक बड़ी टोकरी में अनाज, दो सुन्दर ओढ़निया, कुछ जेवर, एक लम्बी रस्सी, चार दफ्ती पर इ-न-सा-न लिखा हुआ।

वस्त्र– 2 पुरुष– धोती कुरता, 2 स्त्री– सादी साड़ी } दोनों के ऊपर घुटने तक का बिना बाहों का चोगा जो केवल सर डालने की जगह पर कटा हो।

2 सूत्रधार– एक बच्ची, एक बूढ़ी

स्थानः किसी भी नुक्कड़, मीटिंग या कार्यशाला में समतल भूमि पर

दृश्यः चार पात्र उत्तर, दक्षिण, पूरब, पच्छिम की ओर मुंह कर के खड़े हैं। पात्र कमेन्ट्र के संग अपने हाव भाव, मुद्राओं द्वारा मूल विषय को दर्शाते जाएंगे। टोकरी उनके बीच में।

•:————————:•

एक बड़ी सी वादी में वह भी थी और वह भी था।

प्रश्न वे कौन थे?

उत्तर उनका नाम था इन्सान। (सीधी लाइन में दफ्ती पकड़े)

प्रश्न वे क्या करते थे?

उत्तर वे शिकार खेलते, लकड़ी इकट्ठा कर आग जलाते, अपने जानवरों के संग चरागाहों में घूमते। पेड़ों से फल तोड़कर खाते, संग नहाते, खेलते और तो और बराबरी से आपस में और दूसरों से लड़ते भिड़ते और प्यार भी करते, क्योंकि वह एक बड़ा परिवार था।

प्रश्न एक परिवार? कैसे?

उत्तर क्योंकि बच्चे सब की थीं अमानत, मेरी बीवी तेरी बीवी, मेरा मियां-तेरा पति का कोई सवाल ही न था। सब संग में बराबरी के रिश्तों से रहते, क्योंकि आखिर सब इन्सान थे। एक बड़ा परिवार था वह।

प्रश्न फिर क्या हुआ?

उत्तर औरत की सूझ-बूझ से जमीन फल, फूल, अनाज, साग सब्जी देने लगी।

औरत की ही सूझ-बूझ से जमीन की बिखरी मिट्टी बदलने लगी बरतनों में।

औरत की सूझ-बूझ से खेतों में लहलहाती कपास बदलने लगी कपड़ों में।

बस यहीं से पासा पलटा और औरत की आई शामत।

प्रश्न इस में क्या बुराई थी। यह सब तो अच्छा ही हो रहा था?

उत्तर बुराई बस, इतनी हुई, कि इन्सान के बन गए दो फिरके-दो भाग। एक कहलाया जाने लगा औरत और दूसरा आदमी।

प्रश्न पर इससे पासा कैसे पलटा?

उत्तर आदमी डर गया। उसने अपने जिस्म की ताकत से जमीनें तो घेर लीं ताकि उस पर खेती करे, पर काम करने के लिए उसे औरत का मुंह देखना पड़ता। किसी भी बच्चे को वह अपना बच्चा नहीं कह सकता था। सारे बच्चे औरतों के थे।

प्रश्न फिर क्या हुआ?

उत्तर फिर होता क्या इसी डर से उसने औरत की कोख पर हक जमाने की सोची और अपने राज्य के विस्तार की सोची।

प्रश्न तो फिर औरत का क्या हुआ?

उत्तर होता क्या, समय के साथ वह धीरे-धीरे वादियों और मैदानों से बाड़ों के अन्दर आ गई। (यहां रस्सी का प्रयोग किया जा सकता है। बाड़ों से आंगन में, आंगन से चारदीवारों के भीतर और चारदिवारियों से बन्द कोठरियों में। (औरत एक के बाद दूसरी सरहद को लांघती एक छोटे घेरे में बैठ जाती है। वह एक कीमती मशीन की तरह सिर्फ बच्चे पैदा करने के लिए इस्तेमाल की जाने लगी।

(ऊपर का चोगा उतर गया। घर के काम करती हुई)

प्रश्न इस बीच आदमी क्या करता रहा?

उत्तर आदमी सदियों में धीरे-धीरे इन दीवारों को मजबूत बनाता गया और फिर एक खूबसूरत जाल बुनकर औरत को उसमें जकड़ लिया। उसने कहा–

तू नाजुक है तुझे घर में बैठना चाहिए
तू जननी है तेरी देखभाल होनी चाहिए
तू देवी है तेरी पूजा होनी चाहिए
तू सुन्दर है तुझे आभूषणों से लदा होना चाहिए।

(इस समय तक औरत चूड़ी, माला चमकदार दुपट्टे में लिपटी उकडू होकर कोने में बैठी है। देखते ही देखते खुली वादियों में दौड़ती भागती कन्धे से कन्धा मिलाकर उछलती कूदती औरत–बन्द कमरों में घुटने लगी, सिसकने लगी।)

प्रश्न अब क्या होगा?

उत्तर अब, अब उसे अपने सामने बन्द किवाड़ों को तोड़ना होगा। कमरों से, बाहर आंगन में आना होगा। अपने आंगन की दीवारों को तोड़ना होगा। फिर सबको एक दूसरे का हाथ पकड़कर दोबारा वादियों और मैदानों में निकलना होगा। एक दूसरे के आंसू पोंछकर खिलखिलाकर हंसना होगा ताकि वादी फिर इन्सान की आवाज से गूंज उठे।

(आस-पास बैठी बहनें भी इसमें हाथ पकड़कर गाना गा सकती हैं।) □